22

प्रेरितों का इतिहास

या, कलीसिया की स्थापना एवं विस्तार, 30-100 ई.[1]

परिचय

1. प्रेरितों के इतिहास के स्त्रोत। -निज़्न हैं,

क. प्रेरितों के काम की पुस्तक।-लेखक ने सुसमाचार की तीसरी पुस्तक लिखी थी (*तु.* प्रेरितों 1:1; लूका 1:1-4)। वह पौलुस का सहयात्री था। प्रेरितों 16:10; 20:6 तथा अन्य ''हम'' वाले पद देखें। पौलुस की पत्रियों से हमें पता चलता है कि (कुलु. 4:14; 2 तीमु. 4:11; फिले. 23, 24) लूका उसका एक सहकर्मी था और विश्वव्यापी परज़्परा में इस पुस्तक को लूका द्वारा लिखित माना गया है। प्रेरितों के काम, शीर्षक, जो मूल पुस्तक का भाग बिल्कुल नहीं है, भ्रमित करने वाला है। इसमें केवल कुछ ही प्रेरितों के थोड़े से काम दर्ज हैं।

ख. पत्रियों में पाए जाने वाले ऐतिहासिक संकेत। -पत्रियों की संज़्या इज़्कीस है, जिनमें तेरह पौलुस ने लिखी हैं।

ग. प्रकाशितवाज़्य की पुस्तक। -यह पुस्तक दूसरे प्रेरितों की मृत्यु के बहुत बाद प्रेरित यूहन्ना के जीवन के दृश्य दिखाती है।

2. सुसमाचार के इतिहास से सज़्बन्ध। -(1) सुसमाचार की सब पुस्तकों में, यूहन्ना, यीशु, बारह चेले, सज़र चेले, राज्य के निकट होने का प्रचार करते हैं। प्रेरितों के काम में हम मसीह को राज्य करते हुए और पुरुषों व स्त्रियों को उसकी कलीसिया और राज्य में प्रवेश करते हुए देखते हैं।

(2) सुसमाचार की सभी पुस्तकों में संदेश और क्षेत्र सीमित ही थे। प्रेरितों को न तो यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान या उसके मसीहा होने या उसके नाम में पापों की क्षमा का प्रचार करने और न पलिश्तीन से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी। प्रेरितों के काम में हम उन्हें छुटकारे के मसीह के काम का भरपूरी से प्रचार करते और सब जातियों में उसके नाम में पापों की क्षमा की पेशकश करते हुए देखते हैं।

(3) सुसमाचार की पुस्तकों में मसीह अपने स्वर्गारोहण और महिमा पाने के परिणामस्वरूप पवित्र आत्मा भेजने की प्रतिज्ञा करता है। प्रेरितों के काम में हम देखते हैं कि आत्मा ज्ञान देने और पवित्र करने की सामर्थ से आया। प्रेरितों के काम की पुस्तक का उपयुज़्त शीर्षक ''पवित्र आत्मा का सुसमाचार'' माना जाता है।

3. प्रेरिताई के इतिहास के काल। –प्रेरितों के काम की पुस्तक के लिए भेंट के रूप में अंदर आते हुए, हम इतिहास को निम्न कालों में बांटते हैं:

(1) यरूशलेम में कलीसिया की स्थापना तथा विस्तार (30–35 ई.)।[2]

(2) सारे यहूदिया और सामरिया में कलीसिया का विस्तार, और अन्यजातियों में जाना (35–45 ई.)।

(3) अन्यजातियों में पौलुस की मिशनरी यात्राएं (45–58 ई.)।

(4) पौलुस का चार वर्ष का कारावास (58–63 ई.)।

पाद टिप्पणियां

[1]कलीसिया की स्थापना की एक वैकल्पिक तिथि 33 ईस्वी है। [2]वहीं।